अङ्क 2016-17

सकलडीहा स्नातकोत्तर महाविद्यालय

सकलडीहा, चंदौली-232109 (उ.प्र.)

अनामिका

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलक

अनामिका

सत्र 2016-17

संरक्षक

डॉ. प्रमोद कुमार सिंह

प्राचार्य

सम्पादक

डॉ. दयानिधि सिंह यादव

अध्यक्ष (हिन्दी-विभाग)

सह-सम्पादक मण्डल

डॉ. उदयशंकर झा

डॉ. शमीम राइन

डॉ. उमेश कुमार चतुर्वेदी

डॉ. अनिल कुमार तिवारी

प्रकाशक

प्राचार्य, सकलडीहा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज

सकलडीहा, चन्दौली (उ.प्र.)

राष्ट्रगान

जन-गण-मन अधिनायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता।
पंजाब सिन्धु गुजरात, मराठा,
द्राविड़ उत्कल बंग।
विन्ध्य, हिमाचल, यमुना, गंगा
उच्छल जलधितरंग।
तब शुभ नामे जागे,
तब शुभ आशीष माँगे।
गाहे तब जय गाथा,
जन-गण मंगलदायक जय हे।
भारत भाग्य विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय, जय, जय, जय हे।

●

महाविद्यालय-वन्दना

अन्नत आलोक विश्वमूर्ते,
सफल हमारी ये साधना हो।
न हो दीनता न हो पलायन,
स्वदेश सेवा की भावना हो।
हमारे जीवन के पथ दुर्गम,
बने हमारे विकास साधन।
ये आत्मबल हो हमारा सम्बल,
हमारे जीवन की प्रेरणा हो।

●

कुलगीत

प्रफुल्ल शतदल-सा स्निग्ध सुरभित ,
विराट विद्या सदन हमारा ।
अगाध गरिमा-गरिष्ठ वीणा ,
निनादिनी का यह नेत्र तारा ।।

साहित्य-संस्कृति-कला-त्रिवेणी ,
में स्नान नख-शिख सुरम्य वसुधा ।
अतुल्य मेधा के जाह्नवी की ,
यहाँ तरंगित अबाध धारा ।।

विभिन्न विजयों की व्योमचुम्बी ,
स्तुता विद्या स्नातकोत्तरीया ।
सुरम्य ग्रामीण अंचलावृत्त ,
सुज्ञान पादप का पुष्प प्यारा ।।

विकास जलभर से सांद्र पंकिल ,
प्रसून-परिवल से मौली मण्डित ।
उलः स्मरण योग्य दिव्य पंडित ,
श्री कमलापति का तनय दुलारा ।।

प्रफुल्ल शतदल-सा स्निग्ध सुरभित ,
विराट विद्या सदन हमारा ।
अगाध गरिमा-गरिष्ठ वीणा ,
निनादिनी का यह नेत्र तारा ।।

संदेश

डॉ. पृथ्वीश नाग
कुलपति

Dr. Prithivish Nag
Vice Chancellor

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-221002

Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002

हर्ष का विषय है कि सकलडीहा पी. जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका **'अनामिका'** सत्र 2016-17 का प्रकाशन किया जा रहा है।

आशा है महाविद्यालय में साहित्य,भाषा, शिक्षा, समाज, संस्कृति, कला और आधुनिक विषयों पर आलोचना और विमर्श को पर्याप्त स्थान दिया जाएगा जो विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं समाज के सभी वर्गों के लिए लाभदायक सिद्ध होगा।

मैं पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करता हूँ और पत्रिका के प्रकाशन में लगे सभी सदस्यों को साधुवाद देता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित।

पृथ्वीश नाग

पृथ्वीश नाग
(कुलपति)

संदेश

कुलसचिव
Registrar

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ
वाराणसी-221002

Mahatma Gandhi Kashi Vidyapith
Varanasi-221002

मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है कि महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ से सम्बद्ध सकलडीहा पी. जी. कॉलेज, सकलडीहा, चन्दौली द्वारा वार्षिक पत्रिका 'अनामिका' सत्र 2016-17 का प्रकाशन किया जा रहा है। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएं अपने व्यक्तित्व एवं भविष्य का निर्माण कर समाज को विकास के पथ पर आगे ले जाने में अग्रणी भूमिका का निर्वाह कर अपने महाविद्यालय एवं जनपद का नाम रोशन करेंगे।

मैं अपनी ओर से एवं विश्वविद्यालय परिवार की ओर से पत्रिका के सफल प्रकाशन की शुभकामना व्यक्त करता हूँ। साथ ही सम्पादक मण्डल के सदस्यों को बधाई देते हुए महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राओं के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

ओम प्रकाश
(कुलसचिव)

संदेश

प्रशासक,
सकलडीहा पी.जी. कॉलेज / जिलाधिकारी, चंदौली

हर्ष की बात है कि महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'अनामिका' नये कलेवर के साथ प्रकाशित होने जा रही है। इस निमित्त मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, गुरुजन, छात्र-छात्राओं एवम् सम्पादक-मण्डल को साधुवाद देता हूँ।

शिक्षा के समर्पित कुछ कर्मयोगियों द्वारा इस महाविद्यालय की स्थापना सन् 1965 में हुई जो आज पल्लवित और पुष्पित होते हुए विकास के विविध आयामों को छूती जा रही है।

प्रशासक के रूप में मैंने प्रजातांत्रिक प्रणाली के आधार पर अपने दायित्वों का निर्वहन किया है। मेरा अनवरत प्रयास रहा है कि महाविद्यालय का चतुर्दिक विकास हो, इसके लिए मैं दृढ़-संकल्पिक हूँ।

शिक्षा का उद्देश्य छात्र-छात्राओं का शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक एवं भावनात्मक विकास करना है। कहना न होगा कि छात्र-छात्राओं के सभी प्रकार के विकास उसके लेखन-शैली से परिलक्षित होते है निश्चित ही 'अनामिका' इन उद्देश्यों की पूर्ति में प्रेरणा स्रोत होगी।

पुनश्च 'अनामिका' के प्रकाशन के शुभ अवसर पर महाविद्यालय के विकास से जुड़े सभी लोगों के प्रति मैं हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

12/6/17
जिलाधिकारी
चंदौली

हेमन्त कुमार

संदेश

कॉलेज की वार्षिक पत्रिका 'अनामिका' सत्र 2016-17 प्रकाशित होने जा रही है। इस अवसर पर सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार, छात्र-छात्राओं, अध्यापकों, कर्मचारियों एवं अभिभावकों के प्रति मैं अपनी हार्दिक शुभकामना व्यक्त करता हूँ।

किसी भी विद्यालय की पत्रिका उसके सामाजिक, सांस्कृतिक, बौद्धिक एवं साहित्यिक चेतना को प्रतिबिम्बित करती है, वर्ष-पर्यन्त शैक्षणिक गतिविधियों की द्योतक भी होती है।

अपने निर्माण से लेकर अब तक इस महाविद्यालय ने एक लम्बी यात्रा तय की है। इस दौरान हमने उतार-चढ़ावों के दौर से गुजरते हुए छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक विकास में अपनी अग्रणी भूमिका निभायी है कहना न होगा कि महाविद्यालय के विद्वान् प्राध्यापकगण पूरी निष्ठा के साथ अध्यापन के स्तर को स्तरी बनाते रहे हैं तथा कर्मचारी भी सदैव महाविद्यालय के विकास में अपना-अपना योगदान देते रहे हैं। ग्रामी अंचल के लोगों, अभिभावकों का नजरिया भी महाविद्यालय के प्रति सदैव साकारात्मक रहा है। यह ध्यातव्य है कि नकलमुक्त परीक्षा एवं उत्तम परीक्षाफल तथा अनुशासन के लिए कॉलेज की चतुर्दिक ख्याति

प्राचार्य पदभार ग्रहण करने के साथ ही मैं महाविद्यालय की समस्याओं के निदान में तत्परता से लग तथा कॉलेज के सर्वांगीण विकास के प्रति पूर्णनिष्ठा के साथ प्रतिबद्ध हूँ।

महाविद्यालय के बच्चों में लेखन-शैली का विकास करना ही 'अनामिका' का लक्ष्य है। मुझे विश्वास है कि 'अनामिका' अपने उद्देश्य में सफल होगी।

डॉ. प्रमोद कुमार सिं
(प्राचार्य)

सम्पादकीय

फिर बैतलवा डाल पर

विक्रम पेड़ पर से बैताल की लाश उतार कंधे पर रख चल दिये। अभी कुछ ही दूर आगे बढ़े कि लाश बोल पड़ी– विक्रम आज भारत में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान सरकार की ओर से बड़ें जोर-शोर से चलाया जा रहा है। इस अभियान की सार्थकता क्या है? क्या इस अभियान से महिलाओं के पक्ष में कुछ तब्दीली सम्भव है? मेरे इस प्रश्न का उत्तर ठीक-ठीक देना नहीं तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जायेगा।

विक्रम कुछ देर विचार किए फिर बोले–

यह सच है कि इस अभियान की सोच अच्छी है पर इससे कुछ खास हासिल नहीं होगा। कुछ बड़े कानून बनाकर बेटियों की मदद की जा सकती है, पर वह भी आधा-अधूरा ही क्योंकि यह पूरी तरह सामाजिक पहलू है। जब तक समाज इसके लिए स्वतः तैयार नहीं होगा, परिवर्तन संभव नहीं है।

प्रथम दृष्टया इसके लिए महिलाओं को आगे आना होगा। मैं समझता हूँ कि महिलाओं की दुर्दशा के लिए पुरुषों से कहीं ज्यादा महिलाएं ही जिम्मेदार है।

कोई लड़की तभी तक महिलाओं के पक्ष में आवाज बुलन्द करती है जब तक उसकी शादी नहीं होती है। विवाहोपरान्त वह उसी पुराने ढर्रे पर चल पड़ती है, जो सदियों से चला आ रहा है–मसलन पति से बार-बार कहना कि–बेटी नहीं बेटा ही चाहिए–भ्रूण हत्या के लिए दबाव बनाती है, पुरुष ना भी चाहे तो तूफान खड़ा करती है और बेटी पैदा होने पर सबसे ज्यादा मायूस भी वहीं होती है।

बेटा-बेटी में फर्क भी ज्यादा महिलाएँ ही करती है। बार-बार बेटी को अहसास दिलाना कि तुम लड़की हो, लड़के की बराबरी न सोचो– बेटा तो घर का चिराग है, बेटी पराया धन बेटे से ही मुक्ति मिलेगी। एक लोक धुन अक्सर सुनते हैं- 'मोर एक लाख क बछरु, दहेज कुर्सी-मेज माँगे मंगरु'..... पर गौर करें तो इसके पीछे भी महिलाओं का ही हाथ होता है।

अगर बेटी बचाना है तो महिलाओं को अपनी सोच बदलनी होगी–मजबूरी का रोना बन्द करना होगा। मर्दों की सत्ता को चुनौती देनी होगी। भ्रूण हत्या के विरोध में महिलाओं को अपनी भूमिका तय करनी ही होगी।

रही बात बेटी पढ़ाओं की तो इसके प्रति समाज में बहुत हद तक सोच बदली है, हर कोई अपनी बेटी को पढ़ाना चाहता है, उसे आगे बढ़ाना चाहता है। परन्तु सुरक्षा कारणों से लोगों के मनसूबे पर पानी फिर जाता है। कहना न होगा कि लिंगानुपात में निरन्तर बढ़ रहे अन्तर के कारण महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों की आजकल बाढ़ सी आ गई है।

बहरहाल बेटी बचाओं, पर विशेष ध्यान देना होगा। बेटियाँ रहेंगी ही नहीं तो पढ़ाया किसे जायेगा; बेटियाँ नहीं होगी तो परिवार कैसे बढ़ेगा और बेटा-बेटी की परिकल्पना का क्या होगा? कुल मिलाकर कहा जाए तो बेटियों के अभाव में स्वस्थ समाज की अवधारणा संभव है ही नहीं।

विक्रम के मौन-भंग होते ही बैताल की लाश उनके कंधे से उड़कर पुनः पेड़ की डाल पर जा लटकी।

उक्त संपादकीय में मैंने महिलाओं के संबंध में एक विशेष पहलू का उद्घाटन किया है, आशा ही नहीं मुझे पूरा विश्वास है कि इस पर आप जरुर गौर करेंगे, साथ ही साथ 'अनामिका' के सम्पादक मण्डल के प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनके सहयोग के बिना 'अनामिका' का यह नया कलेवर मेरे लिए असंभव ही था।

–डॉ. दयानिधि सिंह यादव

(सम्पादक)

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलक

विषयानुक्रमणिका

• संदेश	-सत्यप्रकाश यादव (पुत्तुल), अध्यक्ष छात्रसंघ	
वर्तमान भारत में लोकतंत्र एवं मीडिया : दशा एवं दिशा	-डॉ. विजेन्द्र सिंह	9
मैं तुलसी तेरे आँगन की	-काजल चौहान	13
दोस्ती	-सोनम पाण्डेय	14
एक छोटी-सी बच्ची की ख्वाहिश	-रश्मी श्रीवास्तव	15
गाँधीवाद	-कवलजीत कौर	16
स्नेह	-बृजेश कुमार यादव	16
सच्ची दोस्ती का पैगाम	-रामप्रकाश	17
'सत्य मेव जयते नानृतम्'	-बीनू	19
ममतामयी माँ	-संगीता रानी	20
भारत के भावी मतदाता	-सोनम पाण्डेय	21
निर्गुण	-प्रिया पाण्डेय	21
'मैं भारत का भावी मतदाता हूँ'	-अल्पना पाण्डेय	22
'मैं भारत का भावी मतदाता'	-आकांक्षा गुप्ता	24
'मैं भारत का भावी मतदाता'	-ऋषिदेव यादव	25
'मतदान का महत्त्व'	-अवनीश कुमार द्विवेदी	27
जीवन का आनंद....	-नौशाद अली	29
बेटियों की हिफाजत करें....	-नौशाद अली	30
देश से प्यार कायदों से इनकार....	-रजिया बेगम	31
अखण्ड भारत पर एक नजर	-रामप्यारे मौर्य	32
चार मोमबत्तियाँ	-सुनीता कुमारी	34
वेदना का स्वर-महादेवी वर्मा	-बिन्दु यादव	35
वर्तमान समाज में नारी का अस्तित्व	-मीनू सिंह	36
नारी	-आशुतोष विश्वकर्मा	38
देश प्रेम का असली मतलब	-चित्रांशी यादव	39
भगवान कहाँ छिप गये	-कु. ममता	40

अनुक्रमिका

महिला सशक्तिकरण	–नितेश मिश्रा	41
मतदाता जागरूकता अभियान	–अभिलेश कुमार मौर्य	42
मतदान कैसे करें	–रिशिदेव यादव	43
जहर हूँ मैं	–अजय कुमार यादव	44
मतदान कैसे करें	–अवनीश कुमार द्विवेदी	45
भारत में मानवाधिकार एवं महिला उत्पीड़न	–सगुन सिंह	46
हास्य कविता	–प्रिया पाण्डेय	49
मै जाऊँ कहाँ	–प्रिया पाण्डेय	50
उम्मीद	–निधि चतुर्वेदी	51
माता-पिता का दर्द	–आकांक्षा गुप्ता	52
जीवन की आशा	–करन कुमार विश्वकर्मा	52
कविता	–ऋषिदेव यदुवंशी	53
पथ की पहचान	–चन्दभूषण	54
साथ	–बीनू	55
नारी की महत्ता	–स्नेहा दीक्षित	56
नन्हीं की पुकार	–भावना द्विवेदी	57
बसन्त	–आयुषी पाण्डेय	58
मत पूछ इस जिंदगी में	–नौशाद अली	59
'स्वच्छ भारत अभियान'	–अल्पना पाण्डेय	60
बिद्रूप दहेज	–अमित कुमार	61
जीवन का उद्देश्य	–निधि पाण्डेय	62
कॉलेज की दुनिया	–प्रतिभा पाण्डेय	63
माँ	–रविकान्त भारती	64
आज के शिक्षक की लाचारी	–बबिता कुमारी	66
वतन शायरी	–श्रवण कुमार	66
पाया किसी-किसी ने	–श्रवण कुमार	66
हास्य प्रेम कविता	–सुनीता कुमारी	67

अच्छे विचार	–सुनीता कुमारी	68
कला वर्ग	–सपना गुप्ता	68
प्रेरणा	–चन्द्रकला कुमारी	69
माँ	–प्रमिला कुमारी	69
आग बहुत-सी बाकी है	–आकाश	70
बेटी बचाओ	–सुनील कुमार	71
प्यार-व्यार	–विवेक कुमार जायसवाल	72
वैलेंटाइन डे	–विवेक कुमार जायसवाल	73
विद्यार्थी जीवन	–पूजा विश्वकर्मा	74
लड़कियाँ	–पूजा मिश्रा	75
बढ़ रही दूरियाँ	–रत्नेश कुमार	76
माँ दे-दे सांसे दो-चार	–आशुतोष विश्वकर्मा	77
जिन्दगी दोस्तों के नाम	–हर्षिता सिंह	78
क्यों माँ	–हर्षिता सिंह	79
नए-नए आविष्कार	–लक्ष्मी कुमारी	80
विद्वता और विनम्रता	–डॉ. अनिल कुमार तिवारी	81
Mother is our first teacher	–Rishidev Yaduvanshi 'Baba'	82
Knowledge is Power	–Rohit Kumar Roy	83

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की झलक